अनुपमा आर्य

आगरा, उत्तर प्रदेश

उम्र का सवाल ।

"अरे, हमें तो लगा
तुम्हारी शादी हो गई होगी।"
"तुम्हारी बहन और तुम्हारे बीच
फासला तो बड़ा है ना?"
"देखो, उम्र निकली जा रही है,
जो मिल रहा है
उसी से कर लो।"

"अपनी बहनों को मत देखो,
उनके जैसा
तुम्हें नहीं मिलने वाला।"
"कोई घर-जमाई ढूँढ लो,
तुम्हारी मम्मी को भी
सहारा हो जाएगा।"
"शादी नहीं करनी
तो बच्चा ही गोद ले लो,
हाँ, मम्मी-पापा को भी
सहारा मिल जाएगा।"

"अरे, तलाकशुदा हुआ
तो क्या हुआ?
अब ऐसी उम्र में
ऐसे ही मिलेंगे।"
लोगों के पास
कितना खाली समय है ना!
मन करता है
एक-एक को सुनाऊँ।
दूसरे ही पल लगता है—
मैं अपनी ऊर्जा
इन पर क्यों लगाऊँ?

शादियों में भी
मेरा पूरा ध्यान
लोगों की बातों से ज़्यादा
खाने पर होता है।
आख़िर गुलाब जामुन ने
मेरा क्या बिगाड़ा है?
लोगों के घर आने से पहले ही
उनके जाने का इंतज़ार होता है।
अब हर आड़े-टेढ़े सवाल से
मिलने का मन नहीं करता,
क्योंकि जवाब देते-देते
अपनी ही शाम छोटी लगती है।

वह हमेशा
लोगों की बातों का विषय बन जाती है,
जबकि वह
अपनी ही धुन में निकल जाती है।
किसने क्या कहा,
किसने क्या सोचा—
अब उसे फर्क नहीं पड़ता।
अब तो वह खुद
लोगों के पास जाकर खड़ी हो जाती है,
उनकी बातों में
अपना योगदान भी देती है—
"इस बार लड़के में
मज़ा नहीं आया,
अगली बार
कोई ढंग का लेकर आना।

लाने से पहले
मुझे बता देना,
थोड़ी और हील पहन लूँगी।
गोरे होने वाली क्रीम
लगा लूँगी,
और चाय भी ऐसी बनाऊँगी
कि आपकी रेल वाली चाय
फीकी पड़ जाए।"
कभी-कभी
अपनी ही बात पर
उसे हँसी आ जाती है।

सोचती है—
इतने सालों में
लोगों ने भी
कितनी परीक्षाएँ बना रखी हैं।
उम्र की,
रंग की,
कद की,
रसोई की,
और अब तो
साथी की भी।
बस एक परीक्षा
कोई नहीं लेता—
"तुम अपनी जिंदगी से
खुश हो?"
शायद इसलिए
वह अब जवाब देना छोड़ चुकी है।

क्योंकि उसने समझ लिया है—
हर सवाल
जवाब माँगने के लिए नहीं होता,
कुछ सवाल
सिर्फ़ दूसरे की सोच
दिखाने के लिए पूछे जाते हैं।
अब तो खुद से ही
हँसी छूट जाती है—
"जब भी शादी होगी,
किसी को नहीं बुलाना।

बस स्टेटस लगा देंगे—
देख लेना,
अंत में हुआ वही
जो मुझे करना था।"
फिर खुद ही मुस्कुरा देती है—
शादी हुई तो क्या,
नहीं हुई तो क्या?
मेरी जिंदगी की
सबसे बड़ी खबर
किसी स्टेटस में
डालने लायक भी तो नहीं।
वह तो मैं
हर रोज़ जी रही हूँ।

लोग अपनी राय लेकर
जहाँ खड़े हैं,
वहीं खड़े रहें।
मैं अपनी चाबी उठाती हूँ,
दरवाज़ा बंद करती हूँ
और अपनी राह निकल जाती हूँ।
क्योंकि उम्र
कैलेंडर पर बढ़ती है,
जिंदगी की कीमत
किसी रिश्ते की तारीख से नहीं।